







೧ ७ बर्षेरे पुनः पूर्व गाँवु आस्थले। एहि ब्यबस्त्राकु उत्तार कुहायाए। गोटिए गाँव लोक तिनिबर्षेरे थरे करि चारेटि गाँव बसउथले।

पूर्वरु पाचब्यबस्त्रारे एहि चारेटि गाँव एमाहार पाठ हेउथला। पाचदेवा॒ रहुथले ग्रामर एर्वेसर्वा। ग्रामदेवाङ्क नियम एमाजिक जाबनर मूल आधार थला। एहि नियम बाहारे केहि रहु नथले। यिए एहाकु उल्लेखन करुथला ऐ निर्बासित हेउथला। राजतन्त्र थला येमिति परिबारर मुख्य, ग्राममुख्य, अञ्चल मुख्य ओ राज्यमुख्य राजा। कोणशि खजशा बा कर देबार ब्यबस्त्रा नथला। एमाजिक, पाचिबाटिक अबा एमाजिक घांझुचिक उष्मबरे केबल उपहार दिआ याउथला। परवर्ती एमयरे भोसलामाने गड्डजात अक्तिआर कलापरे खजशा लागु कले। एहापरे भोसलाङ्क निकटू इंरेजिक्कु श्वमता गला। कर प्रथा बलकृतर रहिला। प्राय अष्टादश शताब्दी॒ शेषवेळकु भोसलामाने प्रजाङ्क निकटू खजशा बा कर नेबार ब्यबस्त्रा आरम्भ कले। इंरेज एरकारंग एमयरे एहा जेओ जबरदस्त एंग्रह करायाउथला। एहापरे चिरम्बाय बदोबस्त्र प्रथा लागुहेला। उड्डार एंग्झुचि लोप पाइगला। केबल खजशा कारणरु बहिरागत कृषकगोष्ठीकु आणि रक्षागला। पूर्व ब्यबस्त्रार बलका तिनोटि गाँव मनेत अनेक जमि आदि राजाङ्क दारा दान करागला। अधुकांश गाँवे जलअमल ब्यबस्त्रा रहिथला अबा नूतन गाँवे मध्य पूर्वरुलि जल परिचालना ब्यबस्त्रा करागला। अनेक लोक बास्त्रुहरा हले एबं गोटिए ब्यबस्त्रा होत बदलिगला।

राजनेतिक अस्त्रिरता एबं परिवर्त्त आजन एह लोके होत मिशिपारिले नाहि॑। निकर उचिमाटि प्रति थवा ममता बहिरागतक निकटरे देखागला नाहि॑। प्रजामाने दुक्ताग होउगले बिद्रोहा॒ ओ राजानुरक्त। जमिदार ब्यबस्त्रा प्रतलन परे आजन गोटिए मध्यवर्ग तिआरि कला। ए एमय पर्यंत परिबार मुख्यतुल्य राजा थले किन्तु शासनर अनेक बिभाग जमिदार, जङ्गल नाका, शिक्षाविभाग आदिरे बहिरागत रहिले। शासन परिचालना पाइ मध्य कर्मचारी आविले। पूर्वरु देखा याउथला मरुद्धिरु रक्षा पाइबा पाइ लोके प्रबास करुथले, किन्तु एहि एमयरे देखागला लोके शासन एबं बहिरागतक प्रादुर्भावरु मध्य पलायन करिबाकु बाध्य हले।

एमाजिक ब्यबस्त्रारे शिष्कार गोष्ठी गोटिए कृषि एंग्झुचि पाइ एतिकि मूल्यबान थले येतिकि जशे कृषक। एमाज दुक्ताग हेबाकु लागिला स्त्रानीय ओ परदेशी। स्त्रानीय लोकाङ्क अपेक्षा परदेशामाने शासन निकटर थवा कारणरु निकर बर्तस्त्र रक्षपारुथले। एरुतोरु बड्ड एमयसा हेला भोसला एबं इंरेज अधुनकु शासन आविलापरे खजशा मुद्रा आकाररे पठू रहिथला। अर्थात पाहापाखरे मुद्रा अस्त्रि ऐ एहि प्रभाबा॒ लोक हेला। एहि एमयरे महाजनी॒ बाजबपन होउथला। महाजनी॒ शेषश, बहिरागत कृषककु प्राथमिकता एबं राज कर्मचारी॒ कृमवर्ष्ण श्वमता अर्थनेतिक दृष्टिरु मूल लोककु दुर्बल करिदेला। केबल माटिर मोह ही॑ थला याहा पालरे लोके निकर गाँमाटि कामुद्धि पड्डि रहिथले।

कृषि एंग्झुचिर एहि बिबर्जनबाद अन्य पठू गोटिए आक्रमण होउथला। ताहाथला एरकारंग जङ्गल आजन। पालरे लोके जङ्गलरु होत बिछिन्ह रहोउगले। ताङ्क जङ्गलर गळबूळ आहार एबु पर होउगला। गोटिए बिरागस्तम्ह उद्दकास्त्र होउगले। कोक एक जङ्गल॒ कुक्कुर दल। कुहायाए येऊँ जङ्गलरे कोक लागे ऐ जङ्गल छाढि बाय मध्य चालियाए। जङ्गल आजन लागु हेलापरे लोके एहाकु कोक लागुहेला रेळि कहिले। येतेबेले बड्डमकार बेले श्रामता॒ जदिरा गान्धी १९७७ मध्यहा मळ मासरे जङ्गलकु रिलिप आकाररे देजदेले येतेबेले एहि रिलिपकु लोके कोकछाडि बोलि कहिथले। जङ्गल आजन बलरे लोकाङ्क केउँ प्रकार आर्थिक ओ एमाजिक श्वमति होउथला। ताहा आजि पर्यंत अध्ययन होउनाहि॑। अनेक चिराचरित प्रक्रिया अपराध स्त्रकु चालिगला।

परिवर्त्त राजनेतिक प्रक्रिया एमाजिक कृम मरुद्धि हाहाकार परिस्त्रिति तिआरि करुथला। मरुद्धि केबल नुहेँ याधारण दिनमानकरे जशे छोउगानी॒ महाजन घरकु चाउल आणिगला बेले परेष्ठ गार्ड घरु पिठापशार बास्त्रा महकु थवा शुद्धिक। एहि परिस्त्रितिरे मरुद्धिकु एडेजबार एमयस्त्र ब्यबस्त्रा थले मध्य मरुद्धि आवश्यकता ठारु अधुक कराक होउ आस्थला।

ଦେଶ ସ୍ବାଧ୍ୟନ ହେଲାପରେ ୧୯୭୫ ମସିହାରେ ସମ୍ବନ୍ଧ ଦେଶରେ ମରୁଡ଼ି ପଡ଼ିଲା । ଏହି ସମୟରେ ଦେଉଳକ୍ଷ ଲୋକଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁର ସୂଚନା ମିଳିଥାଏ । ସରକାର ଏହାକୁ ପ୍ରସତ କଲେ ନାହିଁ । ୧୮୭୫ ଓ ୧୯୭୬ଶା ଜ୍ଞାନାର୍ଥରେ ମରୁଡ଼ି ନିଜର ଶହେତମ ବର୍ଷ ପାଲନ କଲା । ମୋଟାମୋଟି ଏହି ସାମାଜିକ ପରିସ୍ଥିତିରେ ଲୋକେ ମାଟିର ମୋହ ଭୁଲିଗଲେ । କଷ ଉମରା ସ୍ଵାନରେ ବ୍ରାହ୍ମଣ, ମାରବାଡ଼ି, କୁଳତା କି ପଠାଣ ଗଉଡ଼ିଆ ରହିଲେ । ପାଠଦେବୀଙ୍କ ସେବକ ସମ୍ବନ୍ଧ ଗାଁ ଥିଲେ କିନ୍ତୁ ତାହା ବି ଶାସନର ପ୍ରାଦୂର୍ଜବରୁ ସମିତ ହୋଇଗଲେ । ବହିରାଗତ ଓ ମୂଳଲୋକ । ବହିରାଗତଙ୍କୁ ରାଜ ସୁରକ୍ଷା ରହିଲା, ଯାହା ସ୍ଵାଧ୍ୟନତା ପରେ ମଧ୍ୟ କାନ୍ତମ ରହିଲା । ଛପନସାଳ ଦୁର୍ଭକ୍ଷ ରାଜତନ୍ତ୍ରର ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ ଉପହାସ କରିଥିଲା । ନ'ଅଙ୍କ ଦୁର୍ଭକ୍ଷ ଉପନିବେଶ ଶାସନକୁ ଏବଂ ବଡ଼ମକାର ସ୍ଵଦେଶୀ ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ ବେଶ ଉପହାସ କରିଥିଲା । ଛପନସାଳ ମରୁଡ଼ି ଛୋଟଚାଷୀଙ୍କୁ ହତୋସାହିତ କରି ସାରିଥିଲା । ମୁଦ୍ରାଦାରା ଖଜଣା ଅସୁଲ ଅନେକ ଚାଷୀ ପରିବାରକୁ ଉଦବାସ୍ତୁ କରିଦେଲା । ବଡ଼ମକାର କିନ୍ତୁ ଥିଲା ସଂସ୍କରିତ ଅର୍ଥନୀତି ଉପରେ ଶେଷ ପ୍ରହାର । ଲୋକେ ବିଶ୍ଵରି ଗଲେ । କିଏ କେଉଁଠିକୁ ଗଲା କେହି ଜାଣିଲେ ନାହିଁ । ପ୍ରତିଟି ମରୁଡ଼ିରେ ପ୍ରବାସ ହୋଇଛି କିନ୍ତୁ ବଡ଼ମକାରର ପ୍ରବାସରେ ଭିନ୍ନତା ଦେଖାଯାଏ । ଲୋକଙ୍କୁ ମାଟିର ମୋହ ନଥିଲା ।

ଅବଶ୍ୟ ପଳାଯନକୁ ଶିଷ୍ଟ ଆକୃଷ୍ଣ କରେ ଯାହା ବଡ଼ମକାର ବେଳେ ହୋଇଥିଲା । ଆସାମ ଚା ଚାଷ ବେଳକୁ ପଳାଯନ ଗୋର ଜବରଦସ୍ତ ଓ ଉତ୍ତମ ଜୀବନର ସ୍ଵପ୍ନ ଦେଖାଇ ନିଆ ଯାଇଥିଲା । ଆସାମରେ ଅଧିକ ରୋଜଗାର କରିପାରିବ, ରହିବା ବ୍ୟବସ୍ଥା ଶିକ୍ଷା ଆଦି । ଗମନାଗମନ ସୁବିଧା ଫଳରେ ନିଃସ୍ଵଲୋକ ରୋଜଗାର ପାଇଁ ମୁଖ୍ୟତଃ ବଡ଼ମକାର ବେଳେ ଛତିଶରତ ଅଞ୍ଚଳକୁ ଗଲେ । ଏହାପରେ ଭୋପାଳ, ଉତ୍ତରଭାରତ ଆଦି ଅଞ୍ଚଳକୁ ଗଲେ ।

ଦାର୍ଢି ନିଷେଷିତ ସମୂହଙ୍କୁ ନେଇ କେବଳ ଖାଦ୍ୟ ବଦଳରେ ଖଣ୍ଡରବାର ସୁବିଧା ହେଲା । ଏହିଠାରୁ ଆରସ ହେଲା ଦାଦନପ୍ରକ୍ରିୟା । ଯାହା ଆଧୁନିକ କ୍ରୀଡ଼ାସ ପ୍ରକ୍ରିୟା ହିଁ ଅଟେ । ମୁଖ୍ୟତଃ ପର୍ମିନ ଓଡ଼ିଶାରୁ ଲକ୍ଷାଧ୍ୟକ ଲୋକ ଦକ୍ଷିଣ ରାଜ୍ୟକୁ ସାମାଜିକ କ୍ରୀଡ଼ାସ ହୋଇ ଜଟା ଗଢ଼ି ଯାଆନ୍ତି । କେବିକେ ଜିଲ୍ଲାର ଉନ୍ନତି ପାଇଁ କାଶିପୁରରେ ଖନନ ଓ କାରଖାନା କରାଗଲା । ମାତ୍ର ଗୋଟିଏ ଦଶକ ପରେ କାଶିପୁର ଦାଦନ ହବି ହୋଇଗଲା । ଏହି ସମସ୍ତ ଦାଦନ ବଜାରକୁ ମିଶାଇଲେ ଏହା ପାଖାପାଖୁ ପାଞ୍ଚହଜାର କୋଟି ଟଙ୍କାର ଏକ ବ୍ୟବସାୟ ଅଟେ । ପାଞ୍ଚ ହଜାର କୋଟି ଓ ମାନବାଧୁକାର ମଧ୍ୟରେ ଯଦି ତୁଳନା କରାଯାଏ ନିର୍ମିତ ପାଞ୍ଚହଜାର କୋଟିର ବଜାର ମାନବତା ଉପରେ ଭାରି ରହିବ ।

ଏହା ହିଁ ସବାଶେଷ ସତ ଦାଦନ ଜ୍ଞାନାର୍ଥ ।